वर्ष–2

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd No-SSP/LW/NP-75/2005-07

अंक 1

माह जुलाई 2005 लखनऊ

नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन की
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

शुआ-ए-अमल
''लखनऊ''

वार्षिक – 200 रु   मिलने का पता   क़ीमत – 20 रु

नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन
इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड
चौक लखनऊ – 3 (उ.प्र.) भारत फोन न0 0522–2252230

सै. कल्बे जवाद प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपराइटर ने मासिक शुआ–ए–अमल (उर्दू, हिन्दी) निज़ामी आफ़सेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर आफ़िस नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन इमामबाड़ा गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ–3 से प्रकाशित किया।

2

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

६ दो तरह के नशे तुम पर ग़ालिब आ जाएँगे एक राहत व आराम तलबी का नशा और दूसरा जहल व नादानी की तरफ रग़बत का नशा। ऐसी सूरत में तुम अम्र बिल मारूफ और नहीं अनिल मुनकर का फ़रीज़ा तर्क कर दोगे। (रसूले अकरम स0 – नहजुल फसाहा जिल्द–2 पेज–420)

६ बेहतरीन लोग वह हैं जो क़ुर्आन की सबसे ज़ियादा तिलावत करने वाले, दीने ख़ुदा के अहकाम व मसाएल को सबसे ज़ियादा समझने वाले, ख़ुदा के सबसे ज़ियादा परहेज़गार, अम्र बिल मारूफ और नहीं अनिल मुनकर का फरीज़ा ज़ियादा से ज़ियादा बजा लाने वाले और सिल–ए–रहम करने में सबसे आगे हों। (रसूले अकरम स0 – नहजुल फसाहा जिल्द–1 पेज–314)

हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0)

सैय्यदुल उलमा मौलाना सै0 अली नक़ी नक़वी (ताबा सराह)

नाम व नसब : आपका नाम अपने जद्दे बुज़ुर्गवार हज़रत रसूले ख़ुदा (स0) के नाम पर मुहम्मद (स0) था और बाक़िर लक़ब। इसी वजह से इमाम मुहम्मद बाक़िर के नाम से मशहूर हुए बारह इमामों में से यह आप ही को खुसूसियत थी कि आपका सिलसिलए नसब माँ और बाप दोनों तरफ से हज़रत रसूले ख़ुदा (स0) तक पहुँचता है। दादा आपके सय्यिदुश्शोहदा हज़रत इमाम हुसैन (अ0) थे जो रसूले ख़ुदा मुहम्मद मुस्तफा (स0) के छोटे नवासे थे और वालिदा आपकी उम्मे अब्दुल्लाह फातिमा हज़रत इमाम हसन (अ0) की साहबज़ादी थीं जो रसूल (स0) के बड़े नवासे थे इस तरह हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) रसूल (स0) के बुलन्द कमालात और अली (अ0) और फातिमा (स0) की नसल के पाक खुसूसियात के बाप और माँ दोनों की जानिब से वारिस हुए।

विलादत : आपकी विलादत रोज़े जुमा पहली रजब 57 हिजरी में हुई। यह वह वक़्त था जब इमाम हसन (अ0) की वफात को सात बरस हो चुके थे इमामे हुसैन (अ0) मदीने में ख़ामोशी की ज़िन्दगी बसर कर रहे थे और वक़्त की रफ्तार तेज़ी के साथ वाक़ेआए कर्बला के अस्बाब को फराहम कर रही थी ज़माना आले रसूल (स0) और शीआने अहलेबैत के लिये पुर आशोब था चुन–चुन कर मुहिब्बाने अली (अ0) गिरफ्तार किये जा रहे थे, तलवार के घाट उतारे जा रहे थे या सूलियों पर चढ़ाये जा रहे थे उस वक़्त इस मौलूद की विलादत गोया कर्बला के जिहाद में शरीक होने वाले सिलसिले में एक कड़ी की तकमील थी।

वाक़े–ए–कर्बला : तीन बरस मुहम्मद बाक़िर (अ0) अपने जद्दे बुज़ुर्गवार हज़रत इमाम हुसैन (अ0) के साये में रहे जब आपका सिन पूरे तीन बरस का हुआ तो इमाम हुसैन (अ0) ने मदीने से सफर किया। इस कमसिनी में मुहम्मद बाक़िर (अ0) भी रास्ते की तकलीफें सहने में अपने बुज़ुर्गों के शरीक रहे इमाम हुसैन (अ0) ने मक्के में पनाह ली फिर कूफा का सफर इख़्तियार किया और फिर कर्बला पहुँचे। सातवीं मुहर्रम से जब पानी बन्द हो गया तो यक़ीनन मुहम्मद बाक़िर (अ0) ने भी तीन दिन प्यास की तकलीफ बर्दाश्त की। यह ख़ालिक़ के मन्शा की एक तकमील थी कि वह रोज़े आशूर मैदाने कुर्बानी में नहीं लाये गये वरना जब इनसे छोटे सिन का बच्चा अली असग़र तीरे सितम का निशाना हो सकता था तो मुहम्मद बाक़िर (अ0) का भी कुर्बानगाहे शहादत में लाना मुमकिन था मगर सिलसिलए इमामत का दुनिया में क़ायम रहना निज़ामे कायनात के बरक़रार रहने के लिये ज़रूरी और अहम था लिहाज़ा मन्ज़ूरे इलाही यह था कि मुहम्मद बाक़िर कर्बला के जिहाद में उसी तरह शरीक हों जिस तरह उनके वालिदे बुज़ुर्गवार सय्यिदे सज्जाद ज़ैनुल आबेदीन (अ0) शरीक हुए आशूर को दिन भर अज़ीज़ों के लाशे पर लाशे आते देखना, बीबियों में कोहराम, बच्चों में तहलका। इमाम हुसैन का विदा होना और नन्ही सी जान

अली असग़र (अ0) तक का झूले से जुदा होकर मैदान में जाना और फिर वापस न आना इमाम के बावफा घोड़े का दरे ख़ेमा पर ख़ाली ज़ीन के साथ आना और फिर ख़ेमए इसमत में एक क़यामत का बरपा होना यह सब मनाज़िर मुहम्मद बाक़िर(अ0) की आँखों के सामने आये और फिर बादे अस्र ख़ेमों में आग का लगना, असबाब का लूटा जाना, बीवियों के सरों से चादरों का उतारा जाना और आग के शोलों से बच्चों का घबराकर सरासीमा व परेशान इधर–उधर फिरना इस हाल में मुहम्मद बाक़िर (अ0) के नन्हें दिल पर क्या गुज़री और क्या तास्सुरात उनके दिल पर क़ायम रह गये इसका अन्दाज़ा कोई दूसरा इन्सान नहीं कर सकता।

ग्यारह मुहर्रम के बाद माँ और फूफी, दादी, नानी और तमाम ख़ानदान के बुजुर्गों को दुश्मनों की क़ैद में असीर देखा। यक़ीनन अगर सकीना(स0) का बाज़ू रस्सी में बंध सकता था तो यक़ीन किया जा सकता है कि मुहम्मद बाक़िर (अ0) का गला भी रेसमाने ज़ुल्म से ज़रूर बाँधा गया। कर्बला से कूफा और कूफे से शाम और फिर रिहाई के बाद मदीने की वापसी इन तमाम मनाज़िल में न जाने कितने सदमे थे जो मुहम्मद बाक़िर (अ0) के नन्हे से दिल को उठाना पड़े और कितने ग़म व अलम के नक़्श थे जो दिल पर ऐसे बैठे कि आईन्दा ज़िन्दगी में हमेशा बरक़रार रहे।

तरबियत : वाक़ेअए कर्बला के बाद इमाम ज़ैनुलआबेदीन (अ0) की ज़िन्दगी दुनिया की कशमकशों और आवेज़िशों से बिलकुल अलग निहायत सुकून और सुकूत की ज़िन्दगी थी। अहले दुनिया से मेल–जोल बिलकुल तर्क कभी मेहराबे इबादत और कभी बाप का मातम इन ही दो मशग़लों में तमाम औक़ात सर्फ होते थे यह ही ज़माना वह था जिसमें इमाम मुहम्मद बाक़िर ने नशोनुमा पायी। 61 हिजरी से 95 हिजरी तक 34 बरस अपने मुक़द्दस बाप की सीरते ज़िन्दगी का मुताला करते रहे और अपने फितरी और ख़ुदादाद ज़ाती कमालात के साथ उन तालीमात से फायदा उठाते रहे जो उन्हें अपने वालिदे बुज़ुर्गवार की ज़िन्दगी के आईने में बराबर नज़र आती रहीं।

बाप की वफात और इमामत की ज़िम्मेदारियाँ : हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) भरपूर जवानी की मंज़िलों को तय करते हुए एक साथ जिसमानी व रूहानी कमाल के बुलन्द तरीन नुक़ते पर थे और 38 बरस की उम्र थी जब आपके वालिदे बुज़ुर्गवार हज़रत इमाम ज़ैनुल आबेदीन (अ0) की वफात हुई हज़रत ने अपने वक़्ते वफात एक सन्दूक़ जिसमें अहले बैत के मख़्सूस उलूम की किताबें थीं इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) के सुपुर्द किया। नीज़ अपनी तमाम औलाद को जमा करके उन सबकी किफालत व तरबियत की ज़िम्मेदारी अपने फ़रज़न्द मुहम्मद बाक़िर (अ0) पर क़रार दी और ज़रूरी वसीयतें फरमायीं इसके बाद इमामत की ज़िम्मेदारियाँ हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) पर आयीं आप सिलसिल–ए–अहले बैत के पाँचवें इमाम हुए जो रसूले ख़ुदा (स0) के बरहक़ जानशीन थे।

उस दौर की ख़ुसूसियतें : यह ज़माना वह था जब बनी उमैय्या की सलतनत अपनी माद्दी ताक़त के लिहाज़ से बुढ़ापे की मंज़िलों से गुज़र रही थी बनी हाशिम पर ज़ुल्मो सितम और ख़ुसूसन कर्बला के वाक़ेए ने बहुत हद तक दुनिया की आँखों को खोल दिया था और जब यज़ीद ख़ुद अपने मुख़्तसर ज़मान–ए–हयात ही में जो वाक़ेए कर्बला के बाद हुआ अपने किये पर पशेमान हो चुका था और इसके बुरे नताएज को महसूस कर चुका था और इसके बाद उसका बेटा

मुआविया अपने बाप और दादा के अफआल से खुल्लम खुल्ला बेज़ारी का इज़हार करके सलतनत से दस्तबरदार हो गया था तो बाद के सलातीन को कहाँ तक इन मज़ालिम के मुहलिक नताएज का एहसास न होता जबकि उस वक़्त जमाअते तव्वाबीन का जिहाद, मुख़्तार और उनके हमराहियों के ख़ूने हुसैन (अ0) का बदला लेने में इक़दामात और न जाने कितने वाक़ेआत सामने आ चुके थे जिनसे सलतनते शाम की बुनियादें हिल गयीं थी इसका नतीजा था कि इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) के ज़मानए इमामत को हुकूमत के जुल्म व तशद्दुद की गिरफ्त से कुछ आज़ादी नसीब हुई और आपको ख़ल्क़े ख़ुदा की इस्लाह व हिदायत का कुछ ज़ियादा मौक़ा मिल सका।

अज़ाए इमामे हुसैन (अ0) में इन्हेमाक:

आप वाक़ेए कर्बला को अपनी आँख से देखे हुए थे फिर अपने बाप की तमाम ज़िन्दगी का जो इमामे मज़लूम (अ0) के ग़म में रोने में बसर हुई मुताला कर चुके थे यह एहसास भी निहायत तकलीफदेह था कि उनके वालिदे बुज़ुर्गवार बावजूद इतने ग़मो रंज और गिरया व ज़ारी के ऐसा मौक़ा न पा सके कि दूसरों को इमाम हुसैन (अ0) का मातम बरपा करने की दावत देते इसका नतीजा था कि इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) को इसमें ख़ास एहतेमाम पैदा हुआ। आप मजालिस की बिना फरमाते थे और कमीत बिन ज़ैद असदी जो आपके ज़माने के बड़े शायर थे उनको बुलाकर मरसीए इमामे हुसैन (अ0) पढ़वाते और सुनते थे। यही वह इब्तेदा थी जिसे हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ (अ0) और इसके बाद फिर इमाम रिज़ा (अ0) के ज़माने में बहुत फ़रोग़ हासिल हुआ।

इल्मी मरजेईयत : दरिया का पानी बंद के बाँध दिये जाने से जब कुछ अरसे तक ठहर जाये और फिर किसी वजह से वह बंद टूटे तो पानी बड़ी कुव्वत और जोशो ख़रोश के साथ बहता हुआ महसूस होगा। अईम्मए अहलेबैत (अ0) में से हर एक के सीने में एक ही दरया था इल्म का जो मोजेज़न था मगर अक्सर औक़ात जुल्म व तशद्दुद की वजह से इस दरिया को प्यासों के सैराब करने के लिये बहने का मौक़ा नहीं दिया गया इमाम मुहम्मद बाक़िर के ज़माने में जब तशद्दुद का शिकन्जा ज़रा ढीला हुआ तो उलूमे अहलेबैत का दरिया पूरी ताक़त के साथ उमडा और हज़ारों प्यासों को सैराब करता हुआ शरीअते हक़–क़ा और अहकामे इलाही की खेतियों को सरसब्ज़ बनाता हुआ दुनिया में फैल गया। इस इल्मी तबह्हुर और वुसअते मालूमात के मुज़ाहरे के नतीजे में आपका लक़ब बाक़िर मशहूर हुआ। इस लफ़्ज़ के माने हैं "अन्दुरूनी बातों के ज़ाहिर करने वाले" चूँकि आपने अपने इल्म से बहुत से पोशीदा मतालिब को ज़ाहिर किया इसलिये तमाम मुसलमान आपको बाक़िर (अ0) के नाम से याद करने लगे आपसे उलूमे अहलेबैत (अ0) हासिल करने वालों की तादाद सैकड़ों तक पहुँची हुई थी। बहुत से ऐसे अफ़राद भी जो अक़ीदतन अईम्मए मासूमीन (अ0) से वाबस्ता न थे और जिन्हें जमाअत अहलेसुन्नत अपने मुहद्दिसीन में बुलन्द दर्जे पर समझती है वह भी इल्मी फ़यूज़ हासिल करने इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) की ड्योढ़ी पर आते थे। जैसे ज़ुहरी, इमाम औज़ाई और अतार बिन जुरैह, क़ाज़ी हफ़्ज़ बिन ग़यास वग़ैरह यह सब इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) के शागिर्दों में महसूब हैं।

उलूमे अहलेबैत (अ0) की इशाअत :

हज़रत के ज़माने में उलूमे अहलेबैत की हिफाज़त का एहतेमाम हुआ और हज़रत के

शागिर्दों ने उन इफादात से जो उन्हें इमाम मुहम्मद बाक़िर से हासिल हुए मुख़तलिफ उलूम व फुनून और मज़हब के शोबों में किताबें तसनीफ कीं। ज़ेल में हज़रत के कुछ शागिर्दों का ज़िक्र और उनकी तसानीफ के नाम दर्ज किये जाते है जिस से आपको अन्दाज़ा होगा कि इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) से इस्लामी दुनिया में इल्म व मज़हब ने कितनी तरक़्क़ी की।

1– अबान इब्ने तग़लब : यह इल्मे क़िराअत और लुग़त के इमाम माने गये हैं। सबसे पहले किताब ग़रीबुल कुर्आन यानी कुर्आन मजीद के मुशकिल अलफ़ाज़ की तशरीह इन्होंने तहरीर की थी और 141 हिजरी में वफात पायी।

2– अबुजाफर मुहम्मद इब्ने हसन इब्ने अबी सारह रवासी : इल्मे क़िराअत, नह्व और तफसीर के मशहूर आलिम थे। किताब अलफैसल मआनिल कुर्आन वग़ैरह पाँच किताबों के मुसन्निफ हैं। 101 हिजरी में वफात पायी।

3– अब्दुल्लाह इब्ने मैमून असवदुल क़दाह : इनकी तसानीफ से एक किताब मबअसे नबीए रिसालत मआब (स0) की सीरत और तारीख़े ज़िन्दगी में और एक किताब हालाते जन्नत व नार में थी। 105 हिजरी में वफात पायी।

4– अतिया इब्ने सईद औनी : पाँच जिल्दों में तफसीरे कुर्आन लिखी। 111 हिजरी में वफात पायी।

5– इस्माईल इब्ने अब्दुर्रहमान अलअदी अलकबीर : यह मशहूर मुफस्सिरे कुर्आन हैं जिनके हवाले तमाम इस्लामी मुफस्सिरीन ने सदी के नाम से दिये हैं। 127 हिजरी में वफात पायी।

6– जाबिर बिन यज़ीद जुअ्फी : इन्होंने इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) से पचास हज़ार हदीसें सुनकर याद कीं और एक रिवायत में सत्तर हज़ार की तादाद बतायी गयी है इसका ज़िक्र सिहाहे सित्ता में से सही मुस्लिम में मौजूद है। तफसीर, फिक़्ह और हदीस में कई किताबें तसनीफ कीं। 128 हिजरी में वफात पायी।

7– अम्मार बिन मुआविया दहनी : फिक़्ह में एक किताब तसनीफ की। 133 हिजरी में वफात पायी।

8– सालिम बिन अबी हफ्सा अबुयूनुस कूफी : फिक़्ह में एक किताब लिखी। वफात 137 हिजरी में पायी।

9– अब्दुल मोमिन इब्ने क़ासिम अबुअब्दुल्लाह अन्सारी : यह भी फिक़्ह में एक किताब के मुसन्निफ हैं। 147 हिजरी में वफात पायी।

10– अबुहमज़ा शिमाली : तफसीरे कुर्आन में एक किताब लिखी। इसके अलावा किताब अन्नवादिर और किताब अज़्ज़ोहद भी इनके तसानीफ में से हैं। 150 हिजरी में वफात पायी।

11– ज़ुरारह इब्ने अईन : बड़े बुज़ुर्ग मर्तबा शीआ आलिम थे। इनकी इल्मे कलाम और फिक़्ह और हदीस में बहुत सी किताबें हैं। वफात 150 हिजरी में पायी।

12– मुहम्मद बिन मुस्लिम : यह भी बड़े बुलन्द पाया बुज़ुर्ग थे। इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) से तीस हज़ार हदीसें सुनीं। बहुत सी किताबों के मुसन्निफ हैं जिनमें से एक किताब थी चहारसद मस्अला दर अबवाब हलाल व हराम। वफात 150 हिजरी में पायी।

13– यह्या बिन क़ासिम अबुबसीर असदी जलीलुल मर्तबा बुज़ुर्ग थे। किताब मनासिके हज, किताब योम व लैईलह तसनीफ की। 150 हिजरी में वफात पायी।

14– इस्हाक़ कुम्मी : फिक़्ह में एक किताब के मुसन्निफ हैं।

15– इस्माईल बिन जाबिर ख़सअमी कूफी अहादीस की कई किताबें तसनीफ कीं और एक किताब फिक़्ह में तसनीफ की।

16– इस्माईल बिन अब्दुल ख़ालिक़ : बुलन्द मर्तबा फक़ीह थे। इनकी तसनीफ से भी एक किताब है।

17– बरोअल–अस्काफ अल अज़्दी : फिक़्ह में एक किताब लिखी।

18– हारिस बिन मुग़ीरह : यह भी मसाएले फिक़्ह में एक किताब के मुसन्निफ हैं।

19– हुज़ैफा बिन मनसूरे ख़ज़ाओ : इनकी भी एक किताब फिक़्ह में थी।

20– हसन बिन अस्सरी अलकातिब : एक किताब तसनीफ की।

21– हुसैन बिन सौर इब्ने अबी फाख़्ता : किताब अन्नवादिर तहरीर की।

22– हुसैन बिन हम्माद अबदी कूफी : एक किताब के मुसन्निफ हैं।

23– हुसैन बिन मुसअब बजली : इनकी भी एक किताब थी।

24– हम्माद बिन अबी तलहा : एक किताब तहरीर की।

25– हमज़ा बिन इमरान बिन अईन : ज़ुरारह के भतीजे थे और एक किताब के मुसन्निफ थे।

यह चन्द नाम हैं उन कसीर उलमा व फुक़हा व मुहद्दिसीन में से जिन्होंने इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) से उलूमे अहलेबैत को हासिल करके किताबों की सूरत में महफूज़ किया। यह और फिर इसके बाद इमाम जाफर सादिक़ (अ0) के दौर में जो सैकड़ों किताबें तसनीफ हुईं यही वह सरमाया था जिस से बाद में काफी, मन ला यहज़र, तहज़ीब और इस्तेबसार ऐसे बड़े हदीस के ख़ज़ाने जमा हो सके और जिन पर शीओयत का आसमान दौरा करता रहा है।

एख़लाक़ व औसाफ : आपके एख़लाक़ वह थे कि दुश्मन भी क़ायल थे। चुनानचे एक शख़्स अहले शाम में से मदीने में क़याम रखता था और अकसर इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) के पास आकर बैठा करता था उसका बयान था कि मुझे इस घराने से हरगिज़ कोई ख़ुलूस व मुहब्बत नहीं मगर आपके एख़लाक़ की कशिश और फसाहत वह है जिसकी वजह से मैं आपके पास आने और बैठने पर मजबूर हूँ।

उमूरे सलतनत में मशोरा : सलतनते इस्लामिया हक़ीक़त में उन अहलेबैते रसूल (स0) का हक़ थी मगर दुनिया वालों ने माद्दी इक़तेदार के आगे सर झुकाया और उन हज़रात को गोशा नशीनी इख़्तियार फरमाना पड़ी। आम अफरादे इन्सानी की ज़हनियत के मुताबिक़ इस सूरत में अगर हुकूमते वक़्त किसी वक़्त उन हज़रात की इमदाद की ज़रूरत महसूस करती तो साफ तौर पर इन्कार में जवाब दिया जा सकता था। मगर इन हज़रात के पेशे नज़र अली ज़र्फी का वह मेयार था जिस तक आम लोग पहुँचे हुए नहीं होते। जिस तरह अमीरुलमोमिनीन हज़रत अली इब्ने अबी तालिब (अ0) ने सख़्त मौक़ों पर हुकूमते वक़्त को मुफीद मशोरे देने से दरेग़ नहीं किया इसी तरह इस सिलसिले के तमाम हज़रात ने अपने–अपने ज़माने के बादशाहों के साथ यही तर्ज़े अमल इख़्तियार किया चुनानचे हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) के ज़माने में भी ऐसी सूरत पेश आयी। वाक़ेआ यह था कि हुकूमते इस्लाम की तरफ से उस वक़्त तक कोई ख़ास सिक्का नहीं बनाया गया था बल्कि रूमी सलतनत के

सिक्के इस्लामी मुमालिक में भी राएज थे। वलीद बिन अब्दुल मलिक के ज़माने में सलतनते शाम और सुलताने रूम के दरमियान इख़्तेलाफ पैदा हो गया। रूमी सलतनत ने यह इरादा ज़ाहिर किया कि वह अपने सिक्कों पर पैग़म्बरे इस्लाम (स0) की शान के ख़िलाफ कुछ अलफाज़ नक़्श करा देगी। इससे मुसलमानों में बड़ी बेचैनी पैदा हो गयी। वलीद ने एक बहुत बड़ा जलसा मुशावेरत के लिये मुनअक़िद किया जिसमें आलमे इस्लाम के मुमताज़ अफ़राद शरीक थे इस जलसे में इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) भी शरीक हुए और आपने यह राय दी कि मुसलमानों को ख़ुद अपना सिक्का ढालना चाहिये जिसमें एक तरफ ''ला इलाहा इल लल्लाह'' और दूसरी तरफ ''मुहम्मद रसूलुल्लाह (स0)'' नक़्श हो। इमाम (अ0) की इस तजवीज़ के सामने सरे तसलीम ख़म किया गया और इस्लामी सिक्का इसी तौर पर तयार किया गया।

सलतनते बनी उमय्या की तरफ से मुज़ाहमत : बावजूद कि इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) मुल्की मामलात में कोई दख़ल न देते थे और दख़ल दिया भी तो सलतनत की ख़्वाहिश पर वक़ारे इस्लामी के बरक़रार रखने के लिये मगर आप की ख़ामोश ज़िन्दगी और ख़ालिस इल्मी और रूहानी मरजेईयत भी सलतनते वक़्त को गवारा न थी चुनानचे हिशाम बिन अब्दुल मलिक ने मदीने के हाकिम को ख़त लिखा कि इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) को उनके फ़रज़न्द हज़रत जाफर सादिक़ के साथ दमिश्क़ भेज दिया जाये उसको मन्ज़ूर यह था कि हज़रत की इज़्ज़त व वक़ार को अपने ख़याल में धचका पहुँचाया जाय। चुनानचे जब यह हज़रात दमिश्क़ पहुँचे तो तीन दिन तक हिशाम ने मुलाक़ात का मौक़ा नहीं दिया। चौथे दिन दरबार में बुला भेजा एक ऐसे मौक़े पर कि जब वह तख़्ते शाही पर बैठा था और लश्कर दाहिने और बायें हथियार लगाये लाईन से खड़ा हुआ था और बीच दरबार में एक निशाना तीरअन्दाज़ी का मुक़र्रर किया गया था और सलतनत के रईस लोग उसके सामने शर्त बाँध कर तीर लगाते थे। इमाम (अ0) के पहुँचने पर इन्तिहाई जुराअत व जसारत के साथ उसने ख़्वाहिश की कि आप भी इन लोगों के हमराह तीर लगायें। हर तरह से हज़रत ने माज़रत फरमायी मगर उसने क़ुबूल न किया। वह समझता था कि आले मुहम्मद (स0) तवील मुद्दत से गोशा नशीनी की ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं। इनको जंग के फ़ुनून से क्या वास्ता और इस तरह मन्ज़ूर यह था कि लोगों को हंसने का मौक़ा मिले मगर वह यह न जानता था कि उनमें से हर एक फ़र्द के बाज़ू में अली (अ0) की क़ुव्वत और दिल में इमाम हुसैन (अ0) की ताक़त मौजूद है वह हुक्मे इलाही और फ़र्ज़ का एहसास है जिसकी वजह से यह हज़रात एक सुकून और सुकूत का मुजस्समा नज़र आते हैं। यही हुआ कि जब मजबूर होकर हज़रत ने तीर व कमान हाथ में लिया और चन्द तीर पै दरपै एक ही निशाने पर बिलकुल एक ही नुक़्ते पर लगाये तो मजमा ताज्जुब और हैरत में डूब गया और हर तरफ से तारीफें होने लगीं। हिशाम को अपने तर्ज़े अमल पर पशेमान होना पड़ा। इसके बाद हज़रत से मसलए इमामत और फ़ज़ाएले अहलेबैत पर गुफ्तगू हुई जिसके बाद उसको यह एहसास हुआ कि इमाम (अ0) का दमिश्क़ में क़याम कहीं आम ख़िलक़त के दिल में अहलेबैत की अज़मत क़ायम कर देने का सबब न हो इसलिये उसने आपको वापस मदीने जाने की इजाज़त दे दी

.... **(बक़िया पेज–14 पर)**

हज़रत अबूतालिब (अ0) की वफात

आयतुल्लाह जाफ़र सुब्हानी मद्दज़िल्लहू
मुतरजिम : जनाब डाक्टर अख़तर महदी रिज़वी साहब

कुछ नेक अन्देश लोगों की फिक्री कोशिशों की नतीजे में कुरैश की इक़्तेसादी नाकाबन्दी का सिलसिला टूट गया और तीन साल की जिलावतनी व बेसरोसामानी के बाद पैग़म्बर (स0) और उनके वफादार साथी शेबे अबीतालिब से बाहर निकल कर अपने–अपने घरों की तरफ रवाना हो गये। मुसलमानों को ख़रीद व फरोख़्त की पूरी आज़ादी मिल गयी थी और उनके इक़्तेसादी हालात तक़रीबन सुधरने ही वाले थे कि अचानक पैग़म्बरे अकरम (स0) एक ऐसी ज़बरदस्त मुसीबत से दोचार हो गये जिसने बेसहारा मुसलमानों के जज़्बात को ग़ैर मामूली तौर पर मुतास्सिर कर दिया। इस हस्सास व पुरख़तर माहोल में इस हादसे ने मुसलमानों पर क्या असर क़ायम किया इसका अन्दाज़ा लगाना भी दुश्वार था क्योंकि किसी भी मकतबे फिक्र या तहरीक की नशोनुमा और कामियाबी में दो बुनियादी उन्सुर कारफरमा होते हैं यानि आज़ादीए बयान और दिफाअी ताक़त जो दुश्मन के बुज़दिलाना हरबों का मुक़ाबला कर सके। लेकिन यह अजब इत्तेफाक़ था कि जब मुसलमानों को अज़ादीए बयान की सहूलत हासिल हुई तो दूसरे बुनियादी उन्सुर के वजूद से महरूम हो गये यानि इस्लाम का तन्हा हामी व मुहाफिज़ उनके दरमियान से उठ गया।

उस वक़्त पैग़म्बर (स0) उस हामी व मुहाफिज़ से महरूम हो गये जिसने उनकी सरपरस्ती व हिफाज़त की ज़िम्मेदारी उस वक़्त क़ुबूल की थी जब वह सिर्फ आठ साल के थे उस वक़्त उनकी उम्र पचास साल हो चुकी थी। इस मुद्दत के दौरान यह मुहाफिज़ एक परवाने की तरह उनकी शमए हयात के इर्द–गिर्द रहा करता था। और जब तक ''मुहम्मद'' (स0) का कोई ज़रिय–ए–मआश न था यह उनकी किफालत भी करता और अपने बच्चों से ज़ियादा इनका ख़याल रखता था।

पैग़म्बरे अकरम (स0) ऐसी शख़सियत के वजूद से महरूम हो गये जिसको उनके जददे बुजुर्गवार अब्दुल मुत्तलिब ने उनका वली व वारिस क़रार दिया था और यूँ ख़िताब फरमाया था :

ऐ अब्दे मनाफ मैं उस शख़्स की हिफाज़त व सरपरस्ती की ज़िम्मेदारी तुम्हारे सुपुर्द करता हूँ जो यक्तापरस्ती में तुम्हारे वालिद की तरह है। अब्दुल मुत्तलिब की बात का जवाब देते हुए अबुतालिब ने फरमाया : ''वालिदे मोहतरम! मुहम्मद (स0) के सिलसिले में किसी सिफारिश की कोई ज़रूरत नहीं है क्योंकि वह मेरे फ़रज़न्द और मेरे भाई की निशानी हैं।''

(अबुतालिब का नाम अब्दे मनाफ था इसी वजह से उनके वालिद उन्हें इस नाम से मुख़ातिब करते हैं। यह भी कहा जाता है कि उनका नाम इमरान है जैसा कि ज़ियारत नामा में जिसको दूर से पढ़ना मुस्तहब है, पैग़म्बर (स0) को हम इस अन्दाज़ से मुख़ातिब करते हैंः अस्सलामु अला अमलि इमराने अबीतालिब। और बाज़ लोगों का ख़याल है कि अबुतालिब उनका नाम है कुनियत नहीं)

जब पैग़म्बरे अकरम ने अपने चचा की पेशानी पर मौत का पसीना देखा तो वह माज़ी के मुताल्लिक़ तल्ख़ व शीरीं हवादिस की याद में खो गये और अपने आप यह कहने लगे :

1– बिस्तरे मर्ग पर लेटा हुआ यह शख़्स मेरा वही मेहरबान चचा है जो इक़्तेसादी नाकाबन्दी के दौरान पहाड़ की वादी से रातों को मुझे मेरी ख़्वाबगाह से उठाता था और मुझे दूसरी जगह ले जा कर मेरे लिये हर मुमकिन आराम की सहूलत ख़्वाबगाह में फराहम किया करता था और अपने फरज़न्दे अज़ीज़ अली (अ0) को मेरी ख़्वाबगाह में सुला देता था ताकि अगर कुरैश अचानक हमला करके मेरे जिस्म को टुक्ड़े–टुक्ड़े करना चाहें तो उनका तीर सही निशाने पर न लग सके और उनका फरज़न्द अली (अ0) मेरी हिफाज़त में अपनी जान निछावर कर दे और जब एक रात उनके बेटे अली (अ0) ने उनसे कहा कि बाबाजान आख़िर कार एक रात में इसी बिस्तर पर क़त्ल कर डाला जाऊँगा। उन्होंने सख़्त लहजे में यह जवाब दिया।

मेरे बेटे! बुर्दबारी, दानिशमन्दी की अलामतों में से है। हर साहेबे हयात को मौत से हमकिनार होना पड़ेगा। मैं तुम्हारी बुर्दबारी आज़मा चुका हूँ और बलाएँ शदीद हैं और मैं तुमको फ़रज़न्दे नजीब की ज़िन्दगी के लिये कुर्बान कर चुका हूँ उनके बेटे अली (अ0) ने इन बातों का निहायत दिलकश जवाब देते हुए कहा : ''मैं पैग़म्बर (स0) की हिफाज़त की राह में आने वाली मौत को बाअिसे फ़ख्र समझता हूँ।

2–यह बे रूह जिस्म, मेरे इस गिराँक़द्र व वफादार चचा का जिस्म है जिसने मेरे मिशन की ख़ातिर तीन साल तक दरबदरी की ज़िन्दगी बसर की और अपने घर वालों का चैन व सुकून छीन लिया और उनके हुक्म की वजह से सब लोगों ने मेरे साथ पहाड़ की वादी में मसाएब आमेज़ ज़िन्दगी बसर की और उन्होंने अपनी सियादत व सदारत और सरदारी को लात मार दी यानि सारी दुनिया और अपनी हस्ती को बिलकुल फरामोश कर दिया और मुझे अपने साथ रखा और कुरैश के नाम निहायत सख़्त पैग़ाम इरसाल किया और उन लोगों पर पूरी तरह वाज़ेह कर दिया कि वह किसी भी क़ीमत पर मुझसे दस्तबरदार न होंगे। सरदाराने कुरैश के नाम उनके पैग़ाम का मतन यह है :

''ऐ दुश्मनाने मुहम्मद (स0)! यह मत सोचो कि हम लोग मुहम्मद (स0) से दस्तबरदार हो जायेंगे। ऐसा हरगिज़ मुमकिन नहीं। वह मुसाफेरत का आलम हो या ग़ैरे मुसाफेरत का वक़्त वह हम लोगों की नज़र में ग़ैर मामूली एहतेराम के हामिल हैं और ख़ानवादए हाशमी के ताक़तवर हाथ इनको हर नुक़सान व मसाएब से महफ़ूज़ रखेंगे।''

चचा अबुतालिब की मौत की ख़बर फैल गयी और उनके घर से नाला व शेवन की आवाज़ बुलन्द होने लगी। दोस्त दुश्मन सभी उनके घर के इर्द–गिर्द जमा होने लगे ताकि मरासिमे तदफीन में शरीक हो सकें लेकिन क्या यह हो सकता है कि अबुतालिब जैसे सरदारे क़बीला की मौत का चर्चा इतनी जल्दी ख़त्म हो जाये।!

□□□

हज़रत अली अलैहिस्सलाम

आयतुल्लाह सैय्यिद मुहम्मद हुसैन तबातबाई (ताबा सराह)
मुतरजिम : जनाब असर नक़वी जायसी

अमीरुलमोमिनीन हज़रत अली अलैहिस्सलाम सरदारे बनी हाशिम हज़रत अबुतालिब के फ़रज़न्द थे। हज़रत अबुतालिब पैग़म्बरे इस्लाम (स0) के चचा और आप (स0) के सरपरस्त थे। हज़रत अबुतालिब ने हज़रत मुहम्मद (स0) को अपने घर लाकर अपने बेटे की तरह उनकी परवरिश की। पैग़म्बरे इस्लाम के मबअूस बरिसालत होने के बाद आप हज़रत मुहम्मद (स0) की मदद करते रहे, उन आफ़ात को रद्द करने में मसरूफ रहे जो अरब बाग़ियों और ख़ास तौर से क़बीलए कुरैश के लोगों की जानिब से आप पर ढाई जाती थीं। मुअ्तबर मज़हबी रवायात के मुताबिक़ हज़रत अली (अ0) पैग़म्बरे इस्लाम (स0) के मबअूस बरिसालत होने के दस साल क़ब्ल पैदा हुए। जब आप छः साल के थे तो मक्का और इसके अतराफ में क़हत पड़ जाने की वजह से पैग़म्बरे इस्लाम (स0) ने जो कि उनके चचेरे भाई थे हज़रत अली (अ0) से कहा कि वह अपने बाप का घर छोड़कर उनके घर आकर रहने लगें। वहाँ आपकी तरबियत बराहे रास्त पैग़म्बरे इस्लाम (स0) की निगरानी और सरपरस्ती में हुई।

चन्द साल बाद मबअूस बरिसालत होने और पहली बार ग़ारे हिरा में वही हासिल करने के बाद जब रसूले इस्लाम (स0) ग़ारे हिरा छोड़कर शहर में अपने घर वापस आ रहे थे तो रास्ते में आप (स0) की मुलाक़ात हज़रत अली (अ0) से हुई। आप (स0) ने हज़रत अली (अ0) को पूरा वाक़ेआ सुनाया और हज़रत अली (अ0) ने नया मज़हब क़ुबूल कर लिया।

(मनाक़िबे ख़्वारज़मीं पेज–16–22)

फिर जब एक मजमे में रसूले इस्लाम (स0) ने अपने क़राबतदारों को यकजा करके उन्हें अपना मज़हब क़ुबूल करने की दावत दी थी और यह एलान किया था कि जो पहला शख़्स उनकी आवाज़ पर लब्बैक कहेगा वह उनका वकील, नायब और वारिस होगा। तो उस वक़्त जिस तन्हा शख़्स ने अपनी जगह से खड़े होकर आप (स0) का मज़हब क़ुबूल किया था वह हज़रत अली (अ0) थे।

और हज़रत मुहम्मद ने आपके क़ुबूले मज़हब की तौसीक़ की थी। इस तरह इस्लाम में हज़रत अली (अ0) वह पहले शख़्स हैं जिन्होंने सबसे पहले मज़हबे इस्लाम क़ुबूल किया और रसूल (स0) के सहाबियों में वाहिद फ़र्द हैं जिन्होंने सिवाय अल्लाह के कभी किसी और की इबादत नहीं की।

हज़रत अली (अ0) हमेशा पैग़म्बरे इस्लाम (स0) की सोहबते बाबरकत में रहे यहाँ तक कि आप (स0) मक्का से हिजरत करके मदीने चले गये। शबे हिजरत जब कुफ्फार ने रसूले इस्लाम (स0) के घर का मुहासरा कर रखा था और शब के पिछले पहर आपके घर पर हमला करके सोते में आप (स0) के टुक्ड़े कर देने का तहैइय्या कर रखा था, और रसूले इस्लाम (स0) ने अपना घर छोड़कर मदीने का रुख़ किया था तो उस वक़्त हज़रत

अली (अ0) आप (स0) के बिस्तर पर सोये थे।

रसूले इस्लाम (स0) के मक्का छोड़ने के बाद उनके मशवरे के मुताबिक़ हज़रत अली ने कुफ्फार को उनकी अमानतें और माल व अस्बाब वापस कर दिया जो उन्होंने रसूल इस्लाम (स0) के पास रख छोड़ा था। इसके बाद हज़रत अली (अ0) अपनी वालिदए गिरामी, रसूल इस्लाम (स0) की साहबज़ादी और दीगर दो ख़्वातीन को लेकर मदीने चले गये। मदीने में भी हज़रत अली उमूमी और ख़ुसूसी तौर से हमेशा पैग़म्बरे इस्लाम (स0) की सोहबत में रहे, रसूले इस्लाम (स0) ने अपनी और अपनी शरीके हयात हज़रत खदीजतुल कुबरा की चहीती साहबज़ादी हज़रत फातिमा ज़ेहरा (अ0) को हज़रत अली (अ0) के अक़्द में दिया और अपने साथियों में से हज़रत अली को अपने भाई की हैसियत से मुन्तख़ब किया।

हज़रत अली (अ0) सिवाय ग़ज़वए तबूक के उन तमाम ग़ज़वात में शरीक रहे जिनमें रसूले इस्लाम (स0) ने हिस्सा लिया था। क्योंकि ग़ज़वए तबूक के वक़्त रसूले इस्लाम (स0) ने हज़रत अली (अ0) को मदीने में अपनी जगह पर रहने का हुक्म दिया था।

आपने न तो किसी जंग में शिकस्त खाई और न ही किसी दुश्मन के मुक़ाबले से मुँह फेरा। हज़रत अली (अ0) ने पैग़म्बरे इस्लाम (स0) की नाफरमानी कभी नहीं की, जिसकी बिना पर रसूले इस्लाम (स0) ने कहा था : "न तो अली (अ0) कभी हक़ से जुदा हुए, और न हक़ अली (अ0) से जुदा हुआ"

पैग़म्बरे इस्लाम (स0) की वफात के दिन हज़रत अली (अ0) की उम्र तेंतीस साल थी।

अगरचे हज़रत अली (अ0) मज़हबी उमूर में सबके आगे थे और रसूले इस्लाम (स0) के पुराने सहाबियों में से थे। मगर उन्हें इस बिना पर ख़िलाफत के हक़ से महरूम कर दिया गया कि उनकी उम्र कम है, नीज़ यह कि अवाम में उनके बेशुमार दुश्मन भी हैं जिनके अज़ीज़ों को रसूले इस्लाम (स0) के साथ मुतअद्दिद जंगों में उन्होंने क़त्ल किया है। इसका नतीजा यह निकला कि हज़रत अली (अ0) अवामी उमूर से मुकम्मल तौर से कट कर रह गये। हज़रत अली (अ0) ने अपने घर में लायक़ अफ़राद को रूहानियत की तरबियत देने का सिलसिला शुरु कर दिया इस तरह उन्होंने पहले उन तीन खुलफा की मुद्दते ख़िलाफत के पच्चीस साल गुज़ार दिये, जिन्होंने पैग़म्बरे इस्लाम (स0) की जा नशीनी की थी। जब तीसरे ख़लीफा को क़त्ल कर दिया गया तो अवाम ने आप से बैअत कर ली और बहैसियत ख़लीफा के आपका इन्तिख़ाब किया।

अपनी ख़िलाफत के इबतेदाई चार साल और नौ महीनों में हज़रत अली (अ0) ने रसूले इस्लाम (स0) की सुन्नत पर अमल किया और अपनी ख़िलाफत को रूहानी तहरीक की शक्ल दी। नीज़ बहुत सी दूसरी शक्लों की इबतेदा की। फितरी तौर से यह तबदीलियाँ उन मख़सूस जमाअतों के हक़ में नहीं थीं जिन्हें सिर्फ अपने मफाद से ग़र्ज़ थी। इसके नतीजे में सहाबा के एक गिरोह ने (जिनमें तलहा और ज़ुबैर भी शामिल थे और जिन्हें उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा और बिलख़ुसूस मुआविया की हिमायत हासिल थी) तीसरे ख़लीफा हज़रत उसमान के क़त्ल का शाख़िसाना लेकर मुख़ालफीन की सफ में अपना सर उठाया, और हज़रत अली (अ0) के ख़िलाफ बग़ावत बुलन्द कर दी।

इस सिविल नाफरमानी को रोकने के लिए

हज़रत अली (अ0) ने बसरा के नज़दीक तलहा और ज़ुबैर के ख़िलाफ एक जंग लड़ी, जिसे "जंगे जमल" के नाम से याद किया जाता है। और जिसमें उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा भी मुलव्विस थीं। इसके बाद उन्होंने इराक़ और शाम की सरहद पर मुआविया से एक दूसरी जंग की, जो जंगे सिफ्फीन के नाम से मशहूर है, और जो डेढ़ साल तक जारी रही। आपने नहरवान में ख़वारिज से भी जंग की जो जंगे नहरवान के नाम से जानी जाती है। नतीजे में हज़रत अली (अ0) की ख़िलाफत के बेशतर अय्याम ख़ानाजंगी पर क़ाबू पाने की नज़र हो गये। आख़िर में 19 रमज़ानुल मुबारक 40 हिजरी को सुबह को एक ख़ारजी की तलवार से आप मस्जिदे कूफा में ज़ख़्मी हो गये और 21 रमज़ान की शब में एक शहीद की हैसियत से इस दारे फानी से कूच कर गये।

सभी दोस्तों और दुश्मनों के मुताबिक़, एक मुकम्मल इन्सान की हैसियत से हज़रत अली में कोई कमी नहीं थी, और रसूले इस्लाम (स0) के तरबियत याफ्ता सहाबियों में हज़रत अली इस्लामी बसीरत का बेहतरीन नमूना थे। आपकी शख़्सियत से मुताल्लिक़ जो बहस माआरज़े वजूद में आयी और इस मौज़ूअ के ऊपर शीओं और सुन्नियों और दीगर मज़ाहिब के अफ़राद ने जो किताबें तसनीफ कीं उनकी तारीख़ में आप जैसी मुम्ताज़ शख़्सियत किसी और मज़हबी फ़र्द की मुश्किल से ही नज़र आयेगी। रसूले इस्लाम (स0) के सहाबा में इल्म व मआरिफ के नुक़तए नज़र से आप सबसे ज़ियादा क़ाबिल थे और बिलख़ुसूस मुसलमानों में आपका कोई सानी नहीं था। आलिमाना मबाहिस में, इस्लाम में आप पहले शख़्स थे जिन्होंने मनतिक़ी मुज़ाहेरों के दरवाज़े खोले, नीज़ रूहानियत और मआरिफे इलाहिया पर बहस व मुबाहेसा का एहतेमाम किया। आपने कुर्आन के मख़्फ़ी पहलुओं पर बहस की। नीज़ कुर्आन के उसलूब को महफ़ूज़ रखने के लिए अरबी क़वाएद वज़अ की। तमाम अरबों में आपकी तक़ारीर बड़ी फसीह व बलीग़ होती थीं।

हज़रत अली (अ0) की हिम्मत व जुराअत मिसाली थी। पैग़म्बरे इस्लाम (स0) की हयात में और उनकी वफात के बाद आप ने जितनी जंगों में हिस्सा लिया कभी ख़ौफज़दा नहीं हुए बल्कि ओहद, हुनैन, ख़ैबर और ख़न्दक़ जैसी बहुत सी जंगों में जबकि रसूले इस्लाम (स0) के मददगार और मुसलमानों की फौज ख़ौफज़दा हो गयी थी या परागन्दा होकर भाग खड़ी हुई थी आपने कभी दुश्मनों को अपनी पीठ नहीं दिखायी हज़रत अली (अ0) जंग में कभी कोई जंगी मुआहेदा करके तन्हा जंग से बचकर बाहर नहीं आये। जंगी क़वानीन का भरपूर एहतेराम करते हुए आपने कभी किसी कमज़ोर दुश्मन पर वार नहीं किया और न जंग से फरार इख़्तियार करने वाले किसी सिपाही का पीछा किया। आपने कभी दुश्मन पर अचानक हमला नहीं किया और न उन पर पानी बन्द किया। जंगे ख़ैबर में क़िले पर हमले के वक़्त क़िले के दरवाज़े के छल्ले को पकड़कर मिन्टों में उसे एक तरफ उछालकर आप ने इस वाक़ेआ को तारीख़ के औराक़ पर सब्त कर दिया था। जिस दिन मक्का फतह हुआ रसूले इस्लाम (स0) ने हुक्म दिया कि वहाँ पर नसब तमाम बुतों को तोड़ दिया जाये। मक्के में हुबल सबसे बड़ा बुत था, जो पत्थर के एक बड़े मुजस्समे की शक्ल में खाना–ए–काबा की छत पर नसब था। रसूले इस्लाम (स0) के हुक्म की तामील में हज़रत अली (अ0) रसूले इस्लाम (स0) के कन्धों पर खड़े हुए और खाना–ए–काबा की छत पर चढ़कर हुबल

को उखाड़ लिया और उसे नीचे फेंक दिया।

अपने मज़हबी तक़्वे और अल्लाह की इबादत में भी हज़रत अली का कोई सानी नहीं था। बाज़ अफ़राद की इस शिकायत के जवाब में कि अली (अ0) उनसे नाराज़ हैं पैग़म्बरे इस्लाम (स0) ने जवाब दिया कि : ''अली की सरज़निश न करों क्योंकि वह खुदाई इन्बेसात और परागन्दगी के आलम में हैं।''

रसूले इस्लाम (स0) के एक सहाबी अबुदरदा ने मदीने के खजूरों के बाग़ में एक दिन हज़रत अली (अ0) के जिस्म को इस तरह ज़मीन पर पड़ा हुआ देखा जैसे वह कोई सख़्त लकड़ी हो। वह हज़रत अली (अ0) के घर गये ताकि वह उनकी शरीके हयात और पैग़म्बरे इस्लाम (स0) की साहेबज़ादी को इसकी इत्तेला दें और इज़्हारे ताज़ियत करें। पैग़म्बरे इस्लाम (स0) की साहेबज़ादी ने कहा कि ''अली का इन्तेक़ाल नहीं हुआ है, बल्कि वह ख़ौफे खुदा से बेहोश हो गये हैं। उन पर ऐसी कैफियत अकसर तारी हो जाती है।''

ज़रूरतमन्द और मुफलिस असहाब पर हज़रत अली (अ0) की नवाज़िशों के बहुत से क़िस्से मशहूर हैं। नीज़ उन लोगों पर रहम व करम की कहानियाँ भी हैं जो परेशाँ हाली और फाक़ा कशी का शिकार थे। हज़रत अली (अ0) जो कुछ कमाते थे वह ग़रीबों और ज़रूरत मन्दों की मदद पर ख़र्च कर देते थे और खुद तन्गी में और सदगी के साथ अपनी ज़िन्दगी बसर करते थे। हज़रत अली (अ0) को काश्तकारी से बेहद लगाव था, और वह अपना बेशतर वक़्त कुओं की खुदाई, शजरकारी, और खेतों की सिंचाई में सर्फ करते थे। लेकिन उन्होंने जो काश्त की थी और जो कुएँ तामीर किये थे, उन्हें ग़रीबों के लिये वक़्फ कर दिया था। आपके इन अतियात की मालियत जो ''अतियाते अली'' के नाम से मशहूर थे, आपकी उम्र के अवाख़िर में 24 हज़ार तलाई दीनार थी, जो कि एक क़ाबिले ज़िक्र रक़म है।

□□□

(बक़िया इमाम मुहम्मद बाक़िर अ0)..

मगर दिल में हज़रत के साथ अदावत में और इज़ाफा हो गया।

वफात : सलतनते शाम को जितना हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) की जलालत और बुज़ुर्गी का अन्दाज़ा होता गया उतना ही आपका वजूद उनके लिये नाक़ाबिले बर्दाश्त महसूस होता रहा। आख़िर आप को उस ख़ामोश ज़हर के हरबे से जो अक्सर सलतनते बनी उमय्या की तरफ से काम में लाया जाता रहा था, शहीद करने की तदबीर कर ली गयी। वह एक ज़ीन का तोहफा था जिसमें ख़ास तदबीरों से ज़हर पोशीदा किया गया था और जब हज़रत इस ज़ीन पर सवार हुए तो ज़हर जिस्म में सरायत कर गया चन्द रोज़ करब व तकलीफ में बिस्तरे बीमारी पर गुज़रे और आख़िर सात ज़िलहिज्जह 114 हिजरी को 57 बरस की उम्र में वफात पायी।

आपको हस्बे वसीय्यत तीन कपड़ों का कफन दिया गया जिनमें से एक वह यमनी चादर थी जिसे ओढ़ कर आप रोज़े जुमा नमाज़ पढ़ते थे और एक वह पैराहन था जिसे आप हमेशा पहने रहते थे और जन्नतुल बक़ीअ में उसी कुब्बे में कि जहाँ इमाम हसन (अ0) और इमाम ज़ैनुलआबेदीन (अ0) दफन हो चुके थे हज़रत भी दफन किये गये। □□□

इदारा

मुख्य समाचार

ईरान के सदारती इलेक्शन में डाक्टर अहमदी नेज़ाद की कामियाबी पर अमरीका ख़ौफज़दा

तेहरान 25 जून। ईरान के सदारती इलेक्शन में तेहरान के मेयर और सख़्तगीर डाक्टर महमूद अहमदी नेज़ाद ने ज़बरदस्त अक्सरियत के तारीख़ी जीत हासिल कर ली। दूसरे मरहले में डाक्टर अहमदी नेज़ाद ने 62 फीसद और उनके क़रीबी मुख़ालिफ पिछले सदर हुज्जतुल इस्लाम हाशमी रफसन्जानी ने 36 फीसद वोट हासिल किये। इलेक्शन जीतने के बाद डाक्टर अहमदी नेज़ाद ने इंकलाबे ईरान के इस्लामी इक़दार और ईरान को तेल से हासिल होने वाली दौलत की मुन्सिफाना तक़सीम पर ज़ोर दिया। डाक्टर अहमदी नेज़ाद को दीनदार व मज़हबी लोग और समाज के ग़रीब तबक़ों की हिमायत हासिल थी जबकि हुज्जतुत इस्लाम रफसन्जानी की हिमायत इस्लाह पसन्द पार्टियाँ और उमरा का तबक़ा कर रहा था जिसे ख़ौफ था कि कहीं इस्लामी मुल्क पर शिद्दत पसन्दों का ग़लबा न हो जाए।

हुज्जतुल इस्लाम अकबर हाशमी रफसन्जानी के क़रीबी साथी ने नाम न बताने की शर्त पर राइटर को बताया कि अब इलेक्शन ख़त्म हो चुके और हम अपनी शिकस्त कुबूल करते हैं अगरचे मुल्क के तमाम मामलात का आख़री फैसला आला रहनुमा आयतुल्लाह ख़ामेना–ई मद्दज़िल्लहु करते हैं लेकिन अब सख़्तगीर सदर की वजह से फैसले के अमल में एतेदाल पसन्दों का असर नहीं रहेगा। ईरान के इस इलेक्शन के नतीजों पर अमरीकी हुकूमत ने तशवीश ज़ाहिर करते हुए पूरे इलेक्शन को ही नाक़िस क़रार दिया है। उधर बिर्टेन के विदेश मन्त्री जेक स्ट्रा ने कहा कि ईरान की अवाम को यह हक़ हासिल है कि वह अपना फैसला खुद करें और अपने मुस्तक़बिल को खुद ही चुनें।
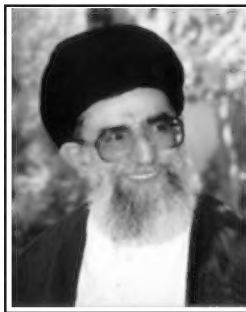
इधर नये सदर मुन्तख़ब होने के बाद डाक्टर अहमदी नेज़ाद ने कहा कि वह अमरीका से ताल्लुक़ात बराबर करने कें बारे में बहुत मोहतात हैं उनकी अपनी एक वेब साइट है जिसमें उन्होंने लिखा है कि अमरीका और मग़रिबी मुमालिक ईरान को आसानी से तरक़्क़ी नहीं करने देंगे लेकिन हम उनकी मर्ज़ी के आगे हथियार नहीं डाल सकते। उनका कहना है कि अमरीका के साथ ताल्लुक़ात ईरान के मसाएल का हल नहीं है। उनका कहना है ऐटमी टेक्नालोजी तक पहुँचना ईरान का हक़ है और दुनिया को उनका यह हक़ तसलीम करना होगा। याद रहे कि ईरान अब तक यह कहता रहा है कि वह ऐटमी टेक्नालोजी के ज़रिए बिजली पैदा करेगा बम नहीं बनाएगा मगर अमरीका इल्ज़ाम लगाता रहा है कि वह ऐटमी असलहा तैयार करना चाहता है।

डाक्टर अहमदी नेज़ाद की जीत अमरीका के मुँह पर ज़बरदस्त तमाचा

तेहरान 25जून। ईरान के रहबरे मोअज़्ज़म आयतुल्लाहिल उज़्मा सय्यिद अली ख़ामेना–ई मद्दज़िल्लहू ने सदारती इलेक्शन में इस्लाम पसन्द डाक्टर महमूद अहमदी नेज़ाद की कामियाबी को अमरीका के मुँह पर एक ज़बरदस्त तमाचा बताया और कहा कि यह इलेक्शन अमरीका के लिए शर्मिन्दगी का बाअिस है।

आयोध्या में दहशतगर्दाना हमले की मुस्लिम उलमा ने मज़म्मत की

लखनऊ 6 जुलाई। अयोध्या में दहशतगर्दों के घुसने के वाक़ेए के सिलसिले में मुस्लिम उलमा और लीडरों ने सख़्त मज़म्मत की है, लेकिन इन रहनुमाओं ने बी0जे0पी0 और संघ परिवार को भी आड़े हाथों लिया है। जो इस वाक़ेए को भुनाना चाहते हैं। मौलाना सय्यिद कल्बे जवाद साहब ने इस वाक़ेए पर रद्देअमल ज़ाहिर करते हुए कहा कि ऐसे हमले सिर्फ नफरत पैदा करने के लिए किये जाते हैं। इससे किसी को भी फाएदा पहुँचने वाला नहीं है सिवाए इसके कि समाज के दीगर तबक़ात में फासला बढ़े। उन्होंने कहा कि इस पूरे मामले की सी0बी0आई0 से जाँच कराने की ज़रूरत है। आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड ने अयोध्या पर दहशत पसन्दाना हमले की मज़म्मत की है और इसे हिफाज़ती दस्ते की कोताही क़रार दिया है। बोर्ड ने मफाद परस्त सियासी जमातों को ख़बरदार किया है कि वह इस वाक़ेए से सियासी फायदा उठाने की कोशिश न करें। बोर्ड के एक रुक्न ज़फरयाब जीलानी ने कहा है कि इस मामले की छान बीन की जाए कि किन अफसरों की ग़फलत से यह वाक़ेआ हुआ।

इराक़ पर हमला अमरीका की भूल

अमरीका में मनमोहन सिंह का जुरअतमन्दाना बयान

वाशिंगटन 20 जुलाई (यू.एन.आई.) वज़ीरे आज़म मनमोहन सिंह ने अपने तीन रोज़ा अमरीकी दौरे के ख़ातमे पर आज कहा कि 2003 में इराक़ पर अमरीकी हमला एक भूल थी। यहाँ क़ौमी प्रेसा कलब से ख़िताब करने के बाद एक सवाल के जवाब में डाक्टर मनमोहन सिंह ने कहा कि अमरीकी हमला एक भूल थी और उन्होंने वाज़ेह किया कि यह बात पुरानी हो गयी अब

हमारी नज़र मुस्तक़बिल पर होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि हिन्दुस्तान चाहता है कि इराक़ में जमहूरी इदारों का क़याम अमल में आए इस सिलसिले में हुकूमते हिन्द इराक़ के लिए मददगार साबित होगी। उन्होंने बताया कि इस सिलसिले में वह इराक़ी हम मन्सब को बता चुके हैं कि पुनर्वास और इराक़ की मआशी तरक़्क़ी में हुकूमते हिन्द हाथ बटा सकती है।

लन्दन में धमाकों की ज़िम्मेदार, अलक़यदा मग़रिब ही की देन है

ईरान। तेहरान के आलिमे दीन आयतुल्लाह मुहम्मद इमामी काशानी मद्दाज़िल्लहू ने लन्दन के धमाकों को ग़ैर इन्सानी और ग़ैर इस्लामी क़रार दिया है लेकिन उन्होंने यह भी वाज़ेह किया कि बिर्टेन के प्रधानमंत्री टोनी ब्लेयर का इस्लाम के बारे में यह कहना कि क्या यही इस्लाम है? ग़लत हैं। आयतुल्लाह मुहम्मद काशानी के मुताबिक़ ब्लेयर इस तब्सेरे से क़ब्ल यह याद करना भूल गये कि अलक़ायदा की परवरिश किसने की थी? उनके लफ़्ज़ों में यह अमरीका और इसराईल की नजायज़ औलाद है लेकिन उनके अफआल इस्लाम

के मुताबिक़ नहीं हैं इसलिए इस्लाम को बदनाम करने से कुछ नहीं होगा। आयतुल्लाह काशानी ने याद दिलाया कि इस नाजयज़ औलाद की परवरिश हमको परेशान करने के लिए की गई थी लेकिन अब नतीजा अमरीका और उसके इत्तेहादियों को झेलना पड़ रहा है। इस मौक़े पर ईरान और खुद आयतुल्लाह मुहम्मद इमामी काशानी ने लन्दन के बम धमाकों की मज़म्मत की है। और कहा कि हमला करने वालों की हिमायत नहीं की जा सकती और मरने या ज़ख़्मी होने वालों के रिश्तेदारों से भी पूरी हमदर्दी है।

लन्दन में धमाकों के ज़िम्मेदार ख़ुद मग़रिबी मुमालिक

मग़रिबी ताक़तों के मश्रिक़े वुस्ता से मुताल्लिक़ पालीसियाँ दहशतगर्दी का अहम सबब - मेयर लन्दन

लन्दन 20 जुलाई। लन्दन के मेयर कीन लोन्कस्टन ने कहा है कि लन्दन धमाकों में उन मग़रिबी ताक़तों का हाथ है जिन्होंने पहले उसामा बिन लादेन जैसे लोगों को दहशतगर्दी की तरबियत दी। लन्दन के मेयर ने कहा कि लन्दन धमाकों में मग़रिबी ताक़तों की मश्रिक़े वुस्ता के बारे में पालीसियों का बड़ा अमल–दख़ल है जो तेल के हुसूल के लिए वहाँ की हुकूमत को तबदील करते हैं। उन्होंने कहा कि मग़रिब की शह पर जो कुछ मश्रिक़े वुस्ता में तीन नसलों से हो रहा है अगर वह सब कुछ हमारे यहाँ हो रहा होता तो मुझे यक़ीन है कि हम भी कई खुदकश बम्बार पैदा कर चुके होते। लन्दन के मेयर ने कहा कि उन्हें लन्दन बम हमलों के मुरतकिब अफ़राद से कोई हमदर्दी नहीं है लेकिन वह उन हुकूमतों की भी मज़म्मत करते हैं जो अपनी ग़ैर मुन्सिफाना ख़ारजा पालीसी को आगे बढ़ाने के लिए बिला तफरीक़ लोगों का क़त्ले आम करती हैं। उन्होंने ने कहा कि अगर मग़रिबी ताक़तें पिछले अस्सी साल से मश्रिक़े वुस्ता में मदाख़लत न कर रही होतीं तो लन्दन में बम धमाके न होते उन्होंने कहा कि मग़रिब ने हमेशा मश्रिक़े वुस्ता में ग़ैर मक़बूल हुकूमतों की हिमायत की और ऐसी हुकूमतों को गिरा दिया जो हमारे ख़याल में मग़रिब की मुख़ालिफ थीं। बी0बी0सी0 रेडियो फोर को दिए गये इण्टरवियू में लन्दन के मेयर ने कहा कि मामलात उस वक़्त ज़ियादा ख़राब हो गये जब अमरीका ने अस्सी की दहाई में उसामा बिन लादेन को अफ़ग़ानिस्तान में रूसियों से लड़ने के लिए भर्ती किया।

कीन लोन्कस्टन ने कहा कि अमरीका ने उसामा बिन लादेन को लोगों को मारने, बम बनाने और बम फाड़ने की तरबियत दी। ऐसा करने वालों ने यह न सोंचा कि कल यही उसामा बिन लादेन उनके ख़िलाफ भी हो सकता है उन्होंने कहा कि मग़रिबी हुकूमतें तेल की तरसील में रुकावट से इतनी ख़ाएफ थीं कि उन्होंने मश्रिक़े वुस्ता में मदाख़लत की पालीसी को जारी रखा। उन्होंने कहा कि अगर हम पहली जंगे अज़ीम के बाद अरबों से किए हुए वादे पर क़ाएम रहते हुए उनके मामलात में मुदाख़लत न करते तो आज हालात इस नहज पर न पहुँचते। मेयर कीन लोन्कस्टन ने कहा कि लन्दन धमाकों के पीछे मग़रिब की दोग़ली पालीसियों का भी हाथ है। और कहा कि मग़रिब ने पहले सद्दाम हुसैन को खुश आमदीद कहा। उन्होंने ने कहा कि कई नौजवान जब देखते हैं कि गवान्ता नामोबे में क्या हो रहा है और वह महसूस करते हैं कि मग़रिब की ख़ारजा पालीसी मुन्सिफाना नहीं है। उन्होंने कहा कि इस्राईली हुकूमत सिर्फ इस बुनियाद पर फिलस्तीनी इलाक़ों पर बमबारी करती है कि इस इलाक़े से हमला आवर निकल कर आते हैं जिनमें मासूम बच्चे, औरतें और लोग मारे जाते हैं कीन लोन्कस्टन ने कहा कि लन्दन में 75 हज़ार मुसलमान रहते हैं लेकिन हमेशा तीन चार ग़ैर नुमाइन्दा लोगों को अख़बार के सफ़हए अव्वल पर जगह मिलती है जिनमें कई हक़ीक़ी दुनिया से बहुत दूर ही रहते हैं। (बशुक्रिया राष्ट्रीय सहारा उर्दू)